Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

शाहजहां का शासनकाल: मुगलकाल का स्वर्ण-युग

Dr. Syed Murshid Faiz*

Lecturer, History Department, Al-Hafeez College, Arrah (Bihar)

सार - ***शाहजहाँ का शासनकाल भारतीय इतिहास में मुगल साम्राज्य का स्वर्ण काल था। शाहजहाँ के शासनकाल में मुगल साम्राज्य का चातुर्दिक विकास हुआ। आर्थिक स्थिति सम्पन्न थी एंव साम्राज्य में शांति व्यवस्था बनी रही तथा सांस्कृतक प्रगति अपने चर्मोत्कर्ष पर थी। शाहजहाँ ने अपने शासनकाल में सीमा में विस्तार किया। उसने प्रान्तों का विस्तार किया। कृषि एंव सिंचाई व्यवस्था में सुधार किया तथा नहरों का निर्माण करवाया। अपने पुर्वजों की भांति शाहजहाँ भी शिक्षा एंव साहित्य का महान संरक्षक था। कला के क्षेत्र में भी अद्‌वितीय प्रगति हुई जिसके कारण शाहजहां का शासनकाल (1628-1658) मुगलकाल का स्वर्ण युग कहलाता है। शाहजहाँ ने अनेक मस्जिद व सुन्दर भवनों का निर्माण करवाया। उसने आगरा में विश्व विख्यात ताजमहल का निर्माण करवाया। दिल्ली में लाल किला, दीवान-ए-आम, दीवद-ए-खास, जामा मस्जिद, जहाँगीर का मकबरा आदि का निर्माण करवाया। खफी खां, राय भारमल, बर्नियर व मनूची ने शाहजहाँ के काल को स्वर्ण युग माना है।***

कुंजीशब्द: स्वर्ण युग, स्थापत्य कला, सुख-शान्ति, सांस्कृतिक, शासन-प्रबन्ध, प्रजा

----------X----------

परिचय

शाहजहाँ के शासनकाल में प्रत्येक क्षेत्र में विशेष उन्नति हुई और साम्राज्य अपने गौरव के शिखर पर जा पहुंचा। शाहजहाँ के राज्यकाल में वे सारी विशेषताएँ विद्‌यमान थीं जिनके आधार पर उसके शासनकाल को स्वर्ण-युग कहा जा सकता है।

राजनीतिक दृष्टिकोण से शाहजहां के युग में शांति, सुरक्षा और मैत्री का वातावरण था और किसी प्रकार के आन्तरिक विद्रोह का भय नहीं था। राजपूत राज्य के हितैषी, मित्र तथा शुभचिन्तक बन चुके थे। मेवाड़ का राणा एक प्रकार से मुगल मनसबदार बन चुका था। उत्तर-पश्चिम में कन्धार के अतिरिक्त समस्त मुगल प्रदेश पूर्णरूप से सुरक्षित थे। काबुल मुगल साम्राज्य का अंग बन चुका था और उसमें अन्य राज्यों जैसी शासन-व्यवस्था विद्‌यमान थी। दक्षिण भारत में मुगल प्रभुत्व का बोलबाला रहा। मराठे शक्तिशाली नहीं हुए थे। अतः मुगलों को उनकी ओर से कोई खतरा नहीं था। पुर्तगालियों का पतन हो चुका था। संक्षेप में, शाहजहां के राज्य में पूर्ण सुख-शान्ति थी और देश आन्तरिक तथा विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित था।

शाहजहां का शासन-प्रबन्ध प्रजा-हितैषी तथा अकबर की शासन की शासन-प्रणाली के ठोस नियमों पर आधारित था। उसने प्रजा के जीवन को सुखी तथ समृद्धशाली बनाने का अथक् प्रयास किया। शासन के क्षेत्र में सर्वत्र कार्य-कुशलता बनी रही। फ्रांसीसी यात्री टेवर्नियर के अनुसार, 'सम्राट् का शासन पितृ-स्नेह से युक्त था और वह अपनी कार्य-कुशलता के लिए विख्यात था। खाफी खां ने भी शाहजहां के शासन-प्रबन्ध की काफी प्रशंसा की है। विदेशी यात्री मनूची ने लिखा है कि सम्राट् राज्य कार्य में बहुत रूचि लेता था। वह सरकारी पदों पर योग्य व्यक्तियों को नियुक्त करता था। अपराधी अधिकारियों को कठोर दण्ड देता था। शासन-प्रबन्ध की कुशलता के कारण उसकी आय में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही थी और देश में सुख-शान्ति का वातावरण था। तत्कालीन इतिहासकार खाफी खां ने लिखा है- "यद्‌यपि विजेता और व्यवस्थापक की दृष्टि से अकबर श्रेष्ठत्तम था, परंतु अपनी भूमि और अर्थ-व्यवस्था, शान्ति और व्यवस्था और राज्य के प्रत्येक विभाग के अच्छे शासन-प्रबन्ध की दृष्टि से ऐसे किसी बादशाह ने भारत में शासन नहीं किया, जिससे शाहजहां की तुलना की जा सके।"

www.ignited.in

शाहजहां के राज्यकाल में वाणिज्य और व्यापार की बहुत अधिक उन्नति हुई। उसके कुशल शासन-प्रबन्ध तथा किसानों के प्रति सहानुभूति के कारण कृषकों की दशा में भारी सुधार हुआ। फलस्वरूप अकबर के समय में जिस परगने की वार्षिक आय तीन लाख रूपये थी, उससे अब सरकार को इस लाख रूपये प्रतिवर्ष की आय होने लगी। मोरलैण्ड के अनुसार, "शाहजहां का शासनकाल कृषकों के लिए सुख और शान्ति का समय था और केवल राजस्व विभाग की वार्षिक आय 21 करोड़ रूपये थी।" सम्राट् द्वारा बलख, बदख्शा, कन्धार सम्बन्धी अभियानों तथा भवन-निर्माण कार्यों पर अपार धन व्यय करने पर भी उसकी मृत्यु के समय 400 लाख रूपए शाही कोष में थे। विदेशी यात्री बर्नियर ने उस समय की समृद्ध अवस्था का वर्णन करते हुए लिखा है, "बंगाल में जीवन-रक्षक वस्तुओं की बहुलता थी, जिसके कारण विदेशी लोग इस राज्य में बसना चाहते थे। चीनी, कपास तथा रेशमी कपड़े की कमी नहीं थी, बल्कि ये वस्तुएँ विभिन्न देशों में निर्यात की जाती थीं। विदेशी व्यापार साम्राज्य की आय का महत्त्वपूर्ण साधन था।"

शाहजहां अपनी प्रजा की सुख-सुविधा और समृद्धि के लिए विशेष रूप से चिन्तित रहता था। वह सबके साथ एक जैसा न्याय करता था। टेवर्नियर ने लिखा है, 'शाहजहां अपनी प्रजा को अपनी संतान के समान समझता था और उस पर एक सम्राट् के समान नहीं, वरन् पिता के समान राज्य करता था।" सम्राट् संकटकाल में पीड़ित प्रजा की हर संभव सहायता करता था। दक्षिण में अकाल के समय सम्राट् ने किसानों का भूमि-कर का 1/3 भाग माफ कर दिया, पीड़ित जनता में लाखों रूपए बांटे और भूखों के लिए मुफ्त भोजन-भण्डार खोल दिए। विदेशियों के प्रति भी सम्राट के हृदय में सद्-व्यवहार की भावना थी। एस. आर. शर्मा के अनुसार- "यद्यपि साम्राज्य में धनवानों की अपेक्षा निर्धनों की संख्या कहीं अधिक थी, तथापि जन-साधारण के लिए जीवन-रक्षक वस्तुओं का अभाव नहीं था।

शाहजहां के शासनकाल में सांस्कृतिक क्षेत्र में भी विशेष उन्नति हुई। उसने अपने दरबार में कलाकारों एवं साहित्यकारों को उदारता से संरक्षण प्रदान किया, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में प्रशंसनीय रचनाएँ रचीं। के. टी. शाह के अनुसार, "शाहजहाँ के समय में असाधारण सांस्कृतिक उन्नति का मुख्य कारण यह था कि सम्राट बड़ी उदारता से प्रत्येक कलाकार को संरक्षण प्रदान करता था और समय≤ पर पुरस्कारों द्वारा उनको प्रोत्साहन भी देता था।"

शाहजहां ने चित्रकला को भी बहुत प्रोत्साहन दिया। सम्राट स्वयं एक अच्छा चित्रकार था। उसने अपने दरबार में मीर हाशम, चित्रमणी, अनूपचित्र और फकीर उल्ला जैसे प्रसिद्ध चिकारों को संरक्षण दे रखा था। सम्राट द्वारा इस क्षेत्र में रूचि लेने के कारण चित्रकला ने विशेष प्रगति की।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. श्रीवास्तव, ए. एल.: मुगलकालीन भारत, पृ. 313।
2. शर्मा, जी. एन.: मेवाड़ एण्ड द मुगल रिलेशन्स, पृ. 138।
3. ईश्वरीप्रसाद: ए शोर्ट हिस्ट्री ऑफ़ मुस्लिम रूल इन इण्डिया।
4. जहांगीरनामा: जिल्द 6, पृ. 382।
5. जाफर, एस. एम.: मुगल एम्पायर, पृ. 200।
6. स्मिथ, वी. ए.: ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया, पृ. 296।
7. शर्मा, एस. आर.: द मेकिंग ऑफ़ मॉडर्न इण्डिया पृ. 278।

Corresponding Author

Dr. Syed Murshid Faiz*

Lecturer, History Department, Al-Hafeez College, Arrah (Bihar)